

## ज्योतिष शास्त्र के आलोक में कुम्भ पर्व

प्रो० गिरिजा शंकर शास्त्री  
पूर्व अध्यक्ष ज्योतिष विभाग  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

अथर्ववेद के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में पृथ्वी के रक्षार्थ ब्रह्माजी द्वारा अमृतपूर्ण चार कुम्भों को चार स्थलों पर स्थापित किया गया था। सनतकुमारादि चारों भाईयों द्वारा उसका अक्षुण्ण प्रचार प्रसार बहुत काल तक होता रहा। कालान्तर में परम्परा लुप्त हो जाने पर वेदव्यास जी के मतों के आधार पर भगवत्पाद शंकराचार्य जी ने चारों कुम्भों की परम्परा को जीवन्त किया। ये चारों स्थल हैं - पूर्व में तीर्थराज प्रयाग गंगायमुना सरस्वती त्रिवेणी तट पर। दक्षिण में उज्जैन क्षिप्रा के तट पर पश्चिम में नासिक गोदावरी के तट पर तथा उत्तर में हरिद्वार गंगा तट पर।

इन कुम्भ पर्वों का काल निर्णय ज्योतिष शास्त्र के अधीन है। ज्योतिष शास्त्र का मूलभूत प्रयोजन भी महात्मा लगध के शब्दों में काल विधान ही है।

### तस्मादिदं कालविधान शास्त्रम् ।

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास का कथन है काल के नियामक सूर्य एवं चन्द्रमा हैं। ये द्वे कालं विधत्तः। सूर्य चन्द्र द्वारा ही तिथि नक्षत्र योगादिकों का ज्ञान होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य आत्मा, चन्द्रमा मन ' बृहस्पति ज्ञान ' अध्यात्म ' धर्म ' भक्ति एवं निष्काम कर्म का तथा शनि वैराग्य है। इन चारों ग्रहों की दृष्टि ' युति अथवा परस्पर राशि परिवर्तन का योग कुम्भपर्व का कारण बनता है। राशियां कुल बारह हैं जिनका विभाग भी चतुर्धा किया गया है। इसमें चार स्थिर राशियां विष्णुपदी कही गयी हैं। चारों हैं - वृष, सिंह ' वृश्चिक तथा कुम्भराशि। '

इन राशियों में जब गोचरवश बृहस्पति संचरण करते हैं तब क्रमशः प्रयाग ' नासिक, उज्जैन तथा हरिद्वार का कुम्भ पर्व मनाना जाता है।

बादरायण संहिता में इन पर्वों का उल्लेख मिलता है।

प्रयागराज कुम्भ पर्व के लिये यह श्लोक प्रसिद्ध है -

**वृषराशिगते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ ।**

**अमावस्या तथा योगःकुम्भाख्यःतीर्थनायके ॥**

अर्थात् वृषराशि में गुरु तथा मकर राशि में सूर्य चन्द्रमा के रहने पर प्रयागराज का कुम्भपर्व सम्पन्न होता है।

नासिक कुम्भ के सन्दर्भ में कहा-

**मेषराशि गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतिः।**

**गोदावर्या भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः॥**

अर्थात् जब सूर्य मेषराशि के हों और बृहस्पति सिंह राशिके तब मुक्ति देने वाला कुम्भ पर्व गोदावरी ( नासिक ) में होता है।

उज्जैन कुम्भ का निर्णय उसी संहिता इस प्रकार है -

**कीटे सूरिःशशीसूर्यःकुहां दामोदरे यदा ।**

**धारायां च भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः॥**

अर्थात् वृश्चिकराशि में बृहस्पति तथा सूर्यचन्द्रमा तुलाराशि में हों तब मुक्तिदायक कुम्भ पर्व धारा (उज्जैन ) में होता है ।

इसी प्रकार हरद्वार के कुम्भका निर्णय करते हुए कहा -

**पद्मिनीनायके भेषे कुम्भराशिगते गुरौ ।**

**गंगाद्वारे भवेद् योगःकुम्भनामा तदोत्तमः॥**

अर्थात् जब सूर्य मेषराशि पर तथा बृहस्पति कुम्भराशि पर हो तो गंगाद्वार (हरिद्वार ) में कुम्भपर्व का उत्तम योग होता है ।

कुम्भपर्व इन्हीं चारों राशियों गुरु के होने पर होते रहे हैं . कालान्तर में परिस्थितियों वश परिवर्तन भी होते गये यथा वृश्चिक राशि के गुरु वाले उज्जैन का कुम्भ सिंह राशि के गुरु के समय कर दिया गया । बादरायण संहिता लुप्तप्राय हो जाने से पुराणों के नाम से ये श्लोक भी कतिपय परिवर्तनों द्वारा लिखे जाने लगे ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विना कालज्ञान के कुम्भपर्वों का निर्णय किया जाना अत्यन्त कठिन होगा । अतःकुम्भपर्वों के काल निर्धारण में ज्योतिष शास्त्र की महती भूमिका है ।